कविता– ''प्रभो'' (जयशंकर प्रसादः– जन्म : 1889ई0 / मृत्युः1937ई0)

जीवन परिचय–

छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद का जन्म काशी नगरी में सन्1889 में हुआ था। इनके पिता बाबू देवी प्रसाद शिक्षा प्रेमी थें, जिन्हें लोग सुँघनी साहु कहकर बुलाते थे। प्रसाद जी की प्रारंभिक शिक्षा का प्रबंध पहले घर पर ही हुआ। बाद में इन्हें क्वीन्स कॉलेज में अध्ययन हेतु भेजा गया। अल्प आयु में ही अपनी मेधा से इन्होंने संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, फारसी और अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। बचपन से ही इनकी रूचि साहित्य की ओर थी। ''इन्दू'' नामक मासिक पत्रिका का इन्होनें सम्पादन किया। साहित्य जगत् में इन्हें वहीं से पहचान मिली। काव्य रचना के साथ–साथ नाटक, उपन्यास एवं कहानी विधा में भी इन्होनें अपना कौशल दिखाया। इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैंः–

काव्य– आँसू, लहर, झरना, कामायनी, प्रेमपथिक, चित्राधार

नाटक– ध्रुवस्वामिनी, विशाखा, राज्यश्री, अजातशत्रु, स्कन्दगुप्त, चंद्रगुपत ,एक घूँट

उपन्यास– कंकाल, तितली, इरावती (अपूर्ण)

कहानी– आकाशदीप ,प्रतिध्वनि, पुरस्कार, गुण्डा, आँधी, छाया, इन्द्रजाल

निबन्ध–काव्यकला तथा अन्य निबन्ध

प्रसाद जी की प्रतिभा बहुमुखी हैं, किन्तु साहित्य के क्षेत्र में कवि एवं नाटककार के रूप में इनकी ख्याती, विशेष हैं। छायावादी कवियों में ये अग्रगण्य है। ''कामायनी'' इनका अन्यतम काव्य ग्रन्थ हैं, जिसकी तुलना संसार के श्रेष्ठ काव्यों से की जा सकती है। 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' का जीता जागता रूप प्रसाद के काव्य में मिलता है।मानव सौन्दर्य के साथ–साथ इन्होने प्रकृति सौन्दर्य का सजीव एवं मौलिक वर्णन किया है। इन्होने ब्रजभाषा एवं खडी बोली दोनों का प्रयोग किया है। इनकी भाषा संस्कृतनिष्ठ है। 15 नवम्बर सन् 1937 ई0 को हिन्दी साहित्य का यह अमर कवि सदा के लिए संसार से विदा हो गया।

पाठ परिचय– जयशंकर प्रसाद की ''प्रभो'' कविता उनके स्फुट कविताओं के संग्रह''कानन कुसुम'' से ली गई है। ईश्वर की स्तुति करते हुए कवि ने उसकी सर्वव्यापकता, सौन्दर्य और शक्तिमत्ता का गुणगाान किया है। कवि को प्रकृति के प्रत्येक उपादान में ईश्वर का अनन्त प्रसाद दृष्टिगत होता है। चन्द्र किरणें ईश्वरीय प्रकाश को व्यक्त करती हैं। सागर की उत्ताल तरंगें उसकी स्तुति करती हैं। चन्द्रिका उसकी मुस्कान को तथा नदियों का कल–कल निनाद उसके आह्लाद को व्यक्त करता है। वस्तुतः प्रकृति के सौन्दर्य और प्रेम से युक्त भव्य रूप को प्रकाशित करने वाला ईश्वर ही है। ईश्वर की कृपा होने पर ही मनुष्य के समस्त मनोरथ पूर्ण होते हैं। खडी बोली हिन्दी में रचित यह कविता प्रसाद जी की भावाभिव्यक्ति का सुंदर उदाहरण है। तत्सममयी और गंभीर भाषा ने कविता को अद्भुत अभिव्यंजना सौष्ठव से युक्त कर दिया है। लयात्मकता, सरसता और मौलिकता की दृष्टि से भी यह कविता उत्तम कोटि की हैं।

जयशंकर प्रसाद

जन्म	30 जनवरी 1889 वाराणसी, उत्तर प्रदेश, भारत
मृत्यु	नवम्बर 15, 1937 (उम्र 47) वाराणसी, भारत
उपजीविका	उपन्यासकार, नाटककार, कवि

विमल इन्दु की विशाल किरणें	विमल– स्वच्छ, निर्मल,। इन्दु– चन्द्रमा।
प्रकाश तेरा बता रही हैं	अनादि–जिसका आरम्भ ज्ञान न हो, ईश्वर।
अनादि तेरी अन्नत माया	अनन्त– जिसका अन्त ज्ञान न हो।
जगत् को लीला दिखा रही हैं	लीला– खेल, नाना प्रकार की घटनाएँ।

व्याख्याः–कवि कहता है– हे प्रभु कोई नहीं जानता कि आपका आविर्भाव कब हुआ? ये चन्द्रमा से छिटक रहीं स्वच्छ किरणें तुम्हारे ही प्रकाश की प्रतीक हैं। ये प्रकृति में घट रही सारी घटनाएँ, और कुछ नहीं, तुम्हारी ही सर्वव्यापिनी माया की मनोहारिणी क्रीडाएँ हैं, जिन्हें देखकर सारा जगत मुग्ध हुआ करता हैं।कवि का विश्वास है कि ज्योतिस्वरूप ईश्वर की अनुभूति चन्द्रमा की स्वच्छ और शीतल किरणों को देखकर की जा सकती है।

प्रसार तेरी दया का कितना	प्रसार–विस्तार।
ये देखना हो तो देखे सागर	सागर–समुद्र(काविस्तार)
तेरी प्रशंसा का राग प्यारे	राग–गीत।
तरंगमालाएँ गा रही हैं	तरंग मालाएँ– निरंतर उठ रही लहरें।

व्याख्या– ईश्वर का हद्य जीव–मात्र के लिए अपार करूणा से भरा है। कोई भी उसकी दया से वंचित नहीं होता। यदि कोई ईश्वर की दया की व्यापकता को जानना चाहता है तो उसे सागर के विस्तार को देख लेना चाहिए। कवि कहता है ,जन जन के प्रिय परमपिता ! ये समुद्रों में निरंतर उठ रही लहरें अपनी ध्वनि में तेरी ही प्रशंसा के गीत गाती रहती हैं।

तुम्हारा स्मित हो जिसे निरखना	स्मित– मुस्कुराना। निरखना– देखना।
वो देख सकता है चंद्रिका को	चंद्रिका– चाँदनी।
तुम्हारे हँसने की धुन में नदियाँ	
निनाद करती ही जा रही हैं	निनाद– ध्वनि।

व्याख्याः– कवि कहता है जो व्यक्ति उस परमेश्वर की मधुर मुस्कान का अनुमान करना चाहता है उसे चाँदनी की मधुर शुभ्रता को ध्यान में लाना चाहिए।उसकी स्नेह और कृपामयी हँसी की ध्वनि नदियों के कल–कल प्रवाह में सुनी जा सकती है।

विशाल मन्दिर की यामिनी में — यामिनी–रात।

जिसे देखना हो दीपमाला — दीपमाला– दीपकों की पंक्तियाँ।

तो तारका-गण की ज्योती उसका — तारका–गण– तारों के समूह।

पता अनूठा बता रही हैं — अनूठा– अनोखा,, अद्भुत।

व्याख्याः– कवि कहता है –क्या तुम उस अज्ञात परमप्रभु के रात्रि में दीपमालाओं से दमकते विशाल मंदिर की झलक पाना चाहते हो? तो फिर उस विशाल नीलाकाश में झिलमिलाते, असंख्य तारागणों को निहारो। वह प्रभु कैसा अनोखा और प्रकाशमय है, इसे ऐसी विराट कल्पना से ही कुछ–कुछ समझा जा सकता है।

प्रभो ! प्रेममय प्रकाश तुम हो — अंशुमाली– सूर्य।

प्रकृति-पद्मिनी के अंशुमाली — प्रकृति–पद्मनी– प्रकृति रूपी कमलिनी।

असीम उपवन के तुम हो माली — असीम– जिसकी कोई सीमा या अंत न हो।

धरा बराबर जता रही है — धरा–पृथ्वी।

व्याख्याः– कवि भावुक होकर कहता है– हे मेरे प्रभु! आप ऐसे प्रकाश हैं जिससे सारी सृष्टि पर निरंतर आपके सहज प्रेम की वर्षा–सी होती रहती है। यह सारी प्रकृतिरूपी कमलिनी को खिलाने वाले, परम प्रसन्नतामय बनाने वाले आप ही है। इस सृष्टिरूपी अनंत उपवन के रक्षक आप ही हैं। इस सत्य को यह सारी पृथ्वी निरंतर बताती आ रही है। पृथ्वी का प्राकृतिक सौन्दर्य, प्रसन्नता देने वाला स्वरूप और इसके प्राणियों में उपस्थित परस्पर प्रेमभाव आपकी कृपा का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

जो तेरी होवे दया दयानिधि — दयानिधि– दया का भण्डार।

तो पूर्ण होता ही है मनोरथ — मनोरथ– मन की इच्छा, अभिलाषा।

सभी ये कहते पुकार करके

यही तो आशा दिला रही है

व्याख्या– कवि जयशंकर प्रसाद कहते हैं –हे दया के भण्डार परमप्रभु! सरा संसार सदा से पुकार कर कहता आ रहा है कि यदि आपकी जीव पर दया दृष्टि हो जाये, तो उसके मन की सारी इच्छाएँ पूर्ण हो जाती है। हे स्वामी इसी को देखकर तो मुझ जैसे निराशों को भी आशा हो रही है कि आप मेरे मनोरथों को भी पूरा करेंगे।